हिमाचल प्रदेश का लोक नाट्य करियाला प्रथम रिपोर्ट
मार्च-अप्रैल-मई 2015 तक
प्रस्तावना

मनुष्य जब समूहों में रहने लगा भूख प्यास जंगली जानवरों का आंतक-अकाल दुर्भिक्ष्य भूंकम्प अतिवृष्ठि जैसी अनेक परिस्थितियाँ से लड़ते जीवन की कला अंजाने में उसके आंरभिक अवस्था में विकसित होने लगी, ध्वनियाँ किलकारीयाँ भरना-उच्छलना कुदना नाचना और सामूहिक आनन्द में खो जाना साथ रहकर शिकार व उसकी नकल -पूजा आव्हान बलि शैल गुहा चित्रांकन हथियार बनाना गुफाओं में रहना पानी भोजन की तलाश में यहां वहां भटकाना वनस्पति में कदं मूल फलों को पहचान कर खाना परजीवियों का शिकार करना कालान्तर में अग्नि के अविष्कार के बाद मांस के भक्षण उसके स्वभाग का हिस्सा बना अर्सा गुज़रा और प्रकृति के साथ मानव जाति ने आसमान का गर्मी-सर्दी वर्षा के सर्कल और विभिन्न वनस्पतियों का पुनः-पुनः जमीन से प्रगटी करण से उस एक अलोकिक शक्ति पर विश्वास बनने लगा इसी वजह से अदिम जन जातियमें देव शक्ति की मान्यता है उसे उन्होंने देवक्रीड़ा कहा इन्हीं जन जातिय परंम्पराओं के नायको ने उसको मानने वालों ने जातिय गोत्र परम्परा वअनेक लोक क्रीड़ाओं को जन्म दिया जो जाति विशेष का गुण धर्म बना।

जैसे जैसे मनुष्य सभ्य होता गया वो समाज के आचार व्यवहार तौर-तरीकों प्रकृति के तत्व को देव मानने लगा सामूहिक प्रार्थनाओं का गान करते करते भाषा संस्कृति मूल्यों से अलग अलग विश्व प्रसिद्ध संस्कृतियां बनी हमारे देश में ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद जैसे ग्रंथ बने इन्हीं वैदिक क्रीड़ओं ने एक नये किस्म की सभ्यता संस्कृति को जम्न दिया इसलिए हम हिमाचल प्रदेश को देव भूमि कहते है यहीं पर

1. वैदिक क्रीड़ा (मंत्रोचार)

2. देवक्रीड़ा (अनुष्ठानिक पर्व)

3. लोक क्रीड़ा (लोकोत्सव)

को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है करियाला इसी देव क्रीड़ा की परम्परा का हिस्सा हैकरियाला का क्षेत्र सोलन शिमला और सिरमौर जिले है इसके अधिष्ठता देव देव बीजेश्वर सोलन जिले के सुबाधू से नीचे धार में एक पहाड़ी नदी के किनारे स्थित है करियाला इन्हीं देव बिजेश्वर को समर्पित किया जाता है।

अलग-अलग कथा में इसका अलग अलग तरह से बख्यान हुआ है कोई इसे बहुत पूराना सबित करने के लिए महाभारत से जोड़ते है कुछ इसका इतिहास 400 साल पूर्व धार राज्य से जोड़ते है तो कोई इसको प्रचलन में लाने के लिए कुठार राज्य की पहली करियाला पार्टी से करते है इसके नाम करियाला पर भी विविध कथाओं में हिमाचल में कुठार के राजा के सपने में आया की हर साल उसे 16 करियाला करने है पूर्णिमा व पंचमी के करियाले बड़े होते थे आखरी करियाला पोल याने रियासत के मुख्य चौक पर किया जाता था जब करियालेछोटे होते थे रात 12-1 बजे हो खत्म जाते थे ये देव बिजेश्वर जी का रतजगा था एक दिन पूजारी को सपने में देव ने आज्ञा दी ये कैसा रतजगा की 12-1 बजे सब सो जाते है पूजारी ने अपना सपना करियालचीयों को सुनाया फिर करियालचीयों ने इसकी कहानी को विस्तार देना शुरू किया और कर....यारा कहते कहते इसका नाम करियाला बन गया।

करियाला लोक नाट्य देव बिजेश्वर से मांगी गई इच्छाओं की पूर्ति हो जाने या मन्नत पूरी हो जाने पर किया जाता है ये मन्नतें सांझी या सामुहिक भी होती है कि इस

बार देव कृपा से खेतीबाड़ी अच्छी हुई, वर्षा समय पर हुई, और देव कृपा से जीवन अच्छी तरह व्यतीत हो रहा है। दूसरी मन्नते परिवारिक कि मन्नते है।

शादी मुंड़न मकान बन गया या अन्य इच्छाओं की पूर्ति हो जाने पर अपने गांव रिश्तेदार के साथ घर में किया जाता है जैसे उत्तर भारत में सत्य नारायण की कथा मन्नत पूरी हो जाने पर होती है ठीक उसी प्रकार सब काम सपन्न हो जाने पर करियाला होता है वैसे तो हम लोग शहरों में करियाला देखते रहे पर इसकी असली जगह गांव देहात में है मुक्ताकाश मंच पर शामियाना लगाकर उसी के किसी एक कोने में जो घरवालों ने तैयार कर दी है उसी स्थान पर करियाला के कलाकार अपना प्रर्दशन कर लेते है यह नाट्य शैली जबरदस्त लोचदार है इसके अभिनेता संगीतज्ञ कोई भी कभी भी प्रस्तुती में कोई भी भूमिका बदल सकते है और उसको बहुत ईमान से निभाते है इनका मानना है कि ये देवते का काम है पूरे-मन-भाव और समर्पित होकर किया जाना चाहिए जब मंडलीयों को पास जाकर देखते है तो कुछ बिलकुल सात्विक कलाकार मिलेंगे पर कुछ गांजा आदि नशे का इस्तेमाल करते है

चूंकि हिमाचल प्रदेश की राते जबरदस्त ठंडी होती है तो शराब आदि भी पी जाती है पर मंच के प्रर्दशनी में इसकी झलक कहीं नहीं दिखती कुछ जगह तो जो व्यक्ति अपने घर यह प्रदर्शन करवा रहा है वो खुद इनके नशे का इन्तजाम करता है पर यह सब तो नौट्ंकी-स्बांग-सांग-माच-नाचा-तमाशा जैसी सभी शैलीयों का हिस्सा है बल्कि लोक का स्वभाग ही कलाकरों का स्वभाग है इस लोक नाट्य में भी स्त्रीयाँ मुख्य प्रर्दशन का हिस्सा नहीं हो सकती, इक्का-दुक्का अपवाद भी है पर आज भी पुरूष ही स्त्रीयों का पार्ट करते है पर यह ग़जब है कि प्रर्दशन देखने वाली सबसे ज्यादा दर्शक स्त्रीयाँ और बच्चे ही होते है स्त्रीयाँ क्यों नहीं होती पूछने पर देवता की नाराज़गी और परम्पराओं का घिसा उदाहरण दिया जाता है।

इस लोक नाट्य को गेयटी थियेटर शिमला-दिल्ली व देश के अन्य लोक नाटय स्थलों पर देखकर मूल्यांकन नहीं किया जा सकता इसके लिए इन लोक नाट्य के क्षेत्र, स्थानीय भाषा, बोली के दर्शकों के बीच ही पता चलता है अपने अंचल में

करियालची और दर्शकों के बीच एक अन्तर सम्बन्ध बन जाते है हम आधुनिक रंगकर्मियों बड़े मंचों पर प्रकाश मंच तकनीकि सामग्रीयों से अपने दर्शकों के बीच आते है और चले जाते है पर करियाला जैसी लोक नाट्य शैली कलाकारों और दर्शकों को बिल्कुल भी अलग नहीं करती गीत-संगीत नाटकीय परिस्थिति हास्य व्यंग स्थानीय भाषा में पंच और अपनी क्षेत्रिय विशेषता चरित्र चित्रण दर्शकों और अभिनेताओं को एकाकार कर देते यही लोक की पारंम्परिक ताकत है।

हंसते दर्शक जो आधुनिकता के तन्त्रजाल और पश्चिमी अनुकरण से नहीं प्राप्त किये जा सकते। चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा हमारे देश के नव वर्ष की शुरूआत का दिन है सारे देश में इसे ग्रिगोरी पंचाग से 57 वर्ष पूर्व शुरू हुए मालव संवत यानि विक्रम संवत के रूप में जानते है ठीक इसी दिन दिल्ली से 378 किलोमीटर और शिमला से लगभग 33 किलोमीटर दूर शोघी से पूर्व में घाटी के बीच एक पहाड़ी रास्ता आगे जाता है इसी के बीच शे गांव है वही लड़की की शादी की मन्नत पूरी हो जाने पर आज करियाला होगा एक दिन पहले अमावस्या थी इसलिए अंधेरी रात में हारमोनियम ढोल-डंका वस्त्र व सामग्री की पेटियाँ लेकर करियालची ऊंची पहाड़ी

पर धड़ा धड़ चढ़ते गये करीब 10 मिनट में तो उस उंची पहाड़ी के शिखर पर थे प्रकाश ध्वनि संगीत के बीच भोजन चल रहा था करियाला की बिछात व मंच लग रहा था करियालचीयों के लिए दो कमरों का इंतजाम था जाते ही डंका शहनाई ढोल ने दूर-दूर तक के गांवों में वादन कर सूचना दे दी की करियालची आ पहुंचे है।

इसके बाद सभी को भोजन के लिए बुलाया गया।

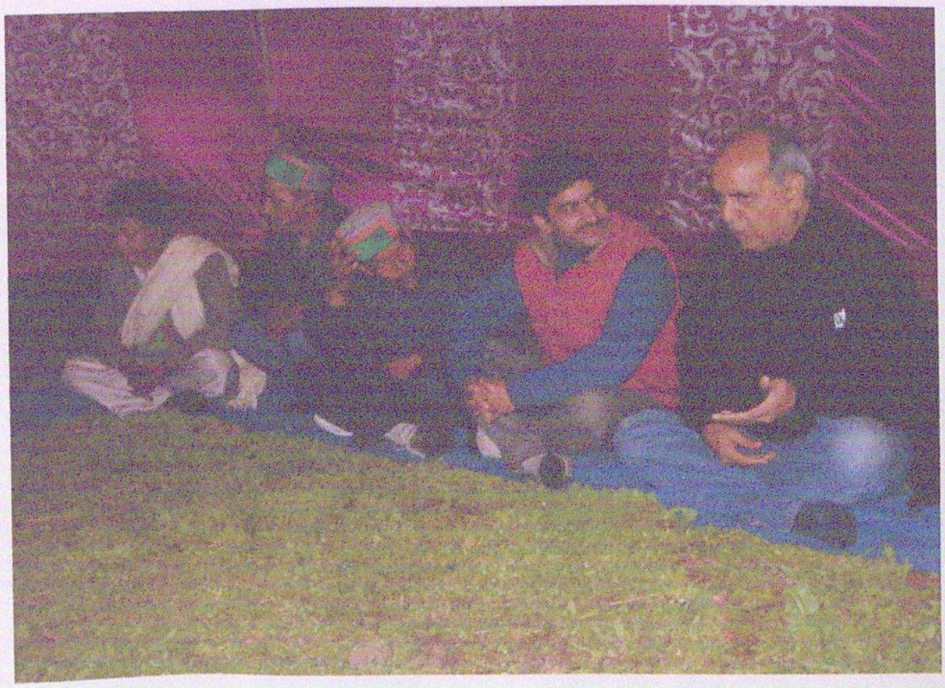

हलवे से शुरूआत हुई चावल, राजमाह, उड़द दाल, रायता पहाड़ों में यही खाना खाया जाता है। भोजन के बाद मेकअप शुरू हुआ सब करियालची छोटे शीशे में देख अपना मेकअप खुद करते रहे पहले तो मेकअप सामग्री देसी होती थी मुर्दासिंधी कुम-कुम काजल पर आज कल नयी रूप सज्जा सामग्री का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है मेकअप करने में कोई जल्दबाजी नहीं कि जाती बल्कि बहुत आराम से धीमी गति से काम होता है। वस्त्र पहनते, स्वर लगाते, गांजें की चिलम के बीच लगभग 2 घंटे तक यही क्रम चलता रहता है।

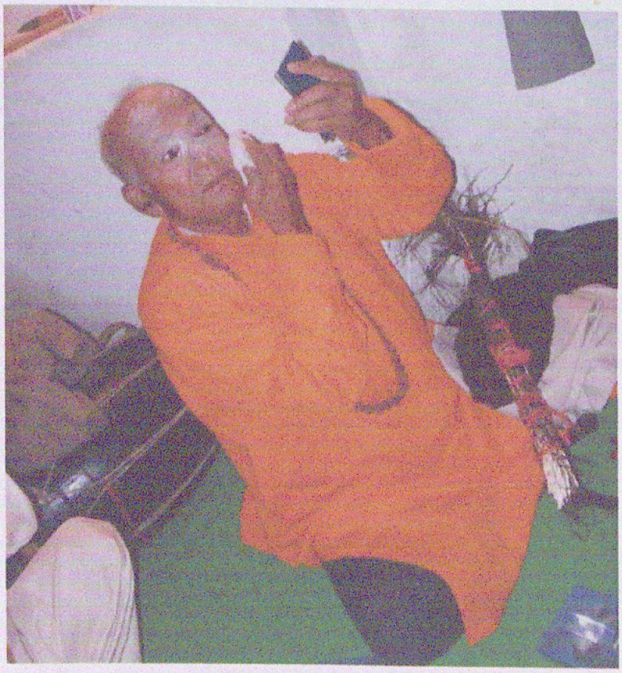

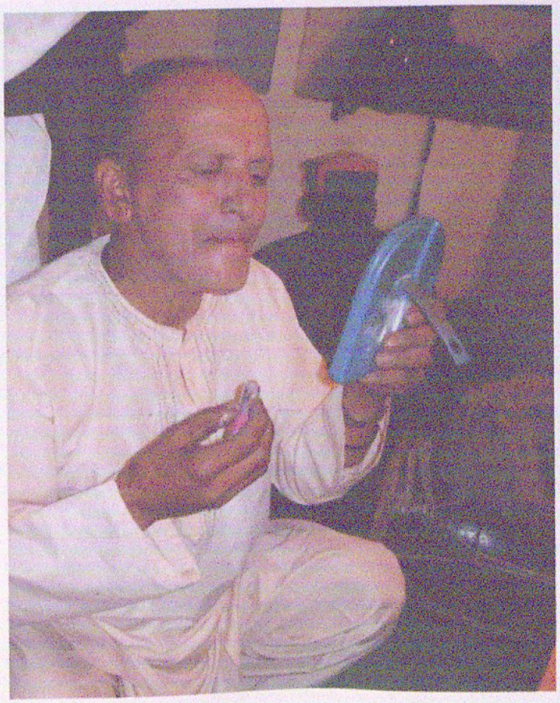

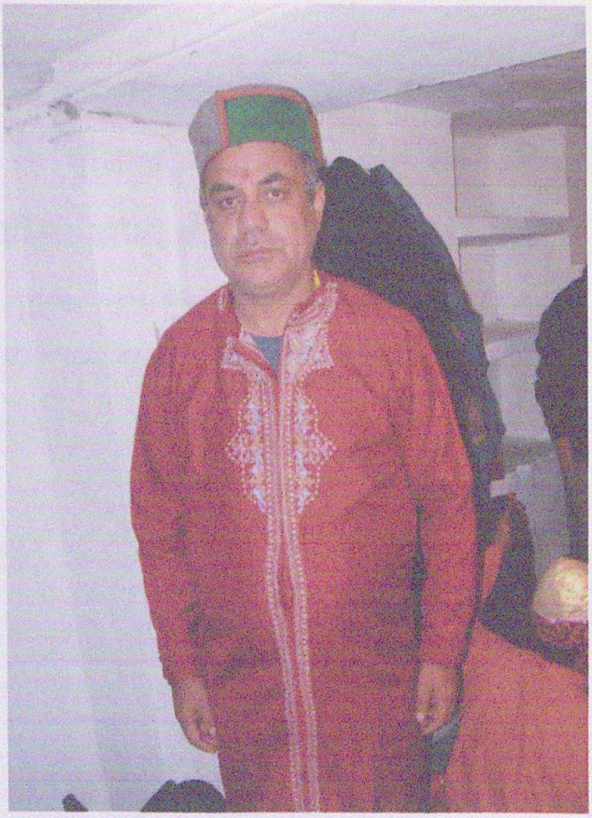

बाहर बहुत ठड़ है और पहाड़ की चोटी पर हवा भी बहुत तेजहै दर्शक गददे रजाई में अपने को लपेटे बैठे हैं।

युवा शराब के नशे की वजह से जोश में ऊँची आवाज में बात कर रहे है और पीछे कुर्सीयों पर अधेड़ बुजुर्ग बैठे है बांये तरफ दो मंजिला मकान है और वहां से उतरकर इस ढालान तक आने के लिए एक पथरिली सीढ़ी है सभी तरफ दर्शक बैठ चूके है धीरे-धीरे संगीत वादकों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया है।

ढोल बजाया जा रहा है। शहनाई की पतीयाँ बदल कर स्वर देखाजा रहा है ठंड में डंका (नगाड़ा) ऊतर गया था वो आग से तपया जा रहा है। अब हारमोनियाम मास्टर गुलाब व ढोल मास्टर नरेश तैयार है सुत्रधार आकर माईक चेक करता है। और मंडली का परिचय भी करवाता है बिजश्वर करियाला कला मंच शिमला एक बहुत पुरानी मंडली है और पूराने करियालची और नये कलाकारों की मिलीजुली मंडली है।

देव प्रार्थना समाप्त होने पर सभी सदस्य एक लाईन में खड़े हो जाते है बिजेश्वर देव माता कांगड़ा वाली शिव की प्रार्थना की जाती है स्थानीय देव भी मनाये जाते है करियालची इस कार्य को देवक्रीड़ा कहते है इसका मकसद देवताओं को मनाना है।

इसके बाद चन्द्रावल शुरू होता है करियाला बगैर चन्द्रावल और साधु के स्वांग के शुरू नहीं हो सकता यह इसका अनुष्ठानिक नृत्य है इसमें एक पुरूष देवी का रूप करता है और एक स्थानीय ड्रेस में शिव रूप में उसके पीछे नृत्य करता है। दोनों का गति संचलन एक जैसा है गीत चल रहा है जय कांगड़ा कालीधारा मैइया जी बैकुण्ठ बसाया यह अनुष्ठानिक नृत्य 15-20 मिनट चलता है अंतरों के बीच दुत लय से नृतक गोल-गोल चक्कर लगाते है और नृत्य मुद्रायें करते जाते है चन्द्रावल नृत्य के बारे में हमारी शास्त्रीय परम्पराओं में भी बताया गया है शुक्ल पक्ष पंचमी से पूरे 10 दिन पूर्णिमा तक रात्री के समय जब प्रकाश नहीं होता है इस तरह के नृत्यों केदेखने को मिलते है जहाँ पुरूष स्त्रीयाँ अपनी जोड़ीयां बनाते थे यह एक सामाजिक अनुष्ठानिक परम्परा है जहां सभी को अपना साथी चुनने का अधिकार होता था इस चन्द्रावली नृत्य में सिर्फ और सिर्फ चांदनी और श्रव्य से उत्पन्न भाव है इसीलिए कलिदास के नाटक मालविकाग्निमित्र मे इसका जिक्र है। इसी बीच देवी देवता की आरती की गई थाली जनता दर्शकों के बीच धुम रही है।

आरती लेने के बाद सभी दर्शक अपनी इच्छा अनुसार दान-दक्षिणा और भेंट भी चढ़ाते है नृत्य समाप्त होने पर गायक गीत गा रहे है ''राम नारायण तुम बड़े और तुम से बड़ा न कोई'' यह साधु का स्वांग शुरू होने की घोषणा है। जो दूर कमरे में बैठे स्वांग के खिलाडीयों को स्वांग शुरू करने की सूचना भी है और जब गीत गाया जायेगा ''साधु की नगरी'' तो एक एक कर सभी साधु विविध चालों और मेकअप में अलग अलग दिशाओं से एक जगह प्रगट होते है।

उनकी भांग-भंगिया में हास्य उत्पन्न करने की प्रवृति छुपी होते है प्रवेश के अन्त में एक चरित्र साधुओं से अलग वेशभूषा में मंच पर आता है ये विदुषक है और आते ही कुछ ऐसा करता है कि दर्शक खुलकर हंसने लगते है सभी साधु और विदुषक जिसे यहां स्थानीय भाषा ये पुरविया (पूरब से आया) कहा जाता है के बीच संवाद होते है जिससे दर्शक बहुत हंसते है गुरू नदी किनारे पूजा करने जाता है पुरविया से पूजा सामग्री मांगता है पुरविया कुछ उल्टा करता है और पूजा हवन रूक जाता है इस के बीच दर्शक खुश होते है।

मुलतः यह कथा गोरख पंथी साधुओं की है जो देशाटन करते रहते थे और अलग-अलग स्थानों से गुजरते भोजन में सिर्फ आटा लेते थे धुनी रमाते थे योग-सत्संग इनका धर्म होता था पर यहां करियाला के आज स्परूप में हास्य व्यंग के रूप में मंनोरजंन करते है और अन्त में सांख्य सिद्धान्त के कुछ गुढ़ रहस्यों को उजाकर जन सामाज को शिक्षित करते है मनोरंजन से शिक्षा का मूल भाव नाट्य शास्त्र से आया है। एक अंक के खत्म होने के बाद दूसरे की शुरू आत से पहते नृर्तकी बने पुरूष आते है। और सूत्र धार के साथ तरह-तरह की बातचीत कर गाते और नृत्य करते है।

पारसी शैली की तरह यह दृश्य बेहद रोचक विषयों पर टीका टिप्पणी करते पति-पत्नि प्रेमी प्रेमिका, स्थानीय राजनीति, सामाजिक, अंध विश्वास आज कल सरकारी कार्य क्रम तभी मिलते है जब आप सरकारी की योजनाओं की जानकारी दे टीकाकरण बीमारियों से बचाब के टीके, बालिका बचाओ, स्त्री शिक्षा नशा बन्दी जैसे अनेक विषय गीत नृत्य संगीत के साथ समझाये जाते है करियाला में इन्हीं रोचक प्रसंगों में लोग (दर्शक) दिल खोलकर कलाकारों पर पैसों की बौछार करते है इनाम दिये जाते इस कथोप-कथन को स्त्रीयाँ खुब इन्जवाए करती और नि:संकोच ईनाम में पैसे भी देती है।

दो प्रेमी भाईयों को एक नया स्वांग पंजाबी का स्वांग है इसमें जब पंजाब में शादी होते ही ज़मीन बाँटदी जाती थी पर यदि एक स्त्री के साथ सभी रहेंगे तो ज़मीन बटने से बच जायेगी जैसा कथानक है पर भाईयों में स्त्री को लेकर लड़ाई होती है। और एक भाई की हत्या दूसरा भाई कर देता है।

सूत्रधार आकर यहां से नम्बरदार का स्वांग शुरू करता है नम्बरदार सूत्रधार के बीच इस घटना को छुपाने की कोशिश होती हड़वड़ी में उपजा हास्य दर्शकों को हँसाता है फिर पुलिस जांच करने पहुंच जाती है और बीच में फँसा नम्बरदार अपने को बचाने की असफल कोशिश करता है पर लगातार पुलिस से पीटता है सुबह की 4 बजे चुके है और ठंड असहनीय हो गई है और हवा काफी तेज चल रही है बीच बीच सभी दर्शकों अभिनेताओं के लिए चाए नमकीन बिस्कुट चल रहे है कुछ बच्चे रजाई में दुबक कर सो चुके है पर स्त्रीयाँ और मर्द अभी भी डटे है और करियाला ब-दस्तुर जारी है इस बार लिंक करने वाला सुत्रधार स्त्रीवेष धारण करने वाला और स्थानीय वेशधारी अभिनेता स्थानीय नाटी कर रहे है थोड़े चरित्र अलग है पर बात वहीं है हास्य रस ही करियाला का मुख्य रस है और वादक अभिनेता और दर्शकों में सीधा संवाद इसे लोक नाट्य को सहज सरल बनाता है।

अन्त में नेपाली स्वांग में नेपालन जिसे बच्चा होने वाला है सुत्रधार के साथ बात करती है गाना गा कर नाचती है सामुहिक प्रार्थना जैकारा के बाद प्रसाद ग्रहण के साथ हम फिर दिल्ली की तरफ निकल पड़े।

करियाला– एक विलुप्त होता लोकनाट्य

लोकनाट्य करियाला हिमाचल प्रदेश के सोलन व शिमला जिलों के ग्रामीण अंचलो में सेकड़ौ वर्षो से खे ला जाता हैं।यहलोकनाट्यशादी, ब्याह,मुंडन व अन्य धार्मिक सामाजिक ज़िम्मेदारियों के पुरे हो जाने पर मानता मनाने के रूप में सदियों से हो रहा हैं।

सम्पूर्ण कुटुंब–पूरा गाँव और परिचित मित्रो के साथ इसका आयोजन पूरी रात मुक्ताकाश रंगमंच पर किया जाता है। शाम होते होते करियालची (करियाला करने वाले) निश्चित गाँव पुहंच जाते हैं, जाते ही शहनाई और डंका नगाड़ा बजाते हैं इससे आसपास के सभी गाँव में ये सन्देश पुहंच जाता हैं कि करियालची पुहंच गए हैं और दूर दूर तक ये वाद्य यंत्रो की ध्वनि पहाड़ौ मे गूंजने लगती हैं। लोग अपने घरों से तैयार होकर प्रदर्शन स्थल तक पहुँच जाते हैं। यह पूर्व रंग का हिस्सा है तीन तरफ दर्शको को बैठाने का इंतेज़ाम दरियों, कुर्सियो व रजाई, गद्दों आदि के साथ किया जाता है, चौथी तरफ वो कमरा होता हैं जहाँ करियालची तैयार होते हैं। लोहे की छोटी संदूकों से वाद्ययंत्र श्रृंगार और रूप सज्जा सामग्री निकाल कर जमा देते है। चाय – पान के उपरांत करियालची तैयार होना शुरू करते हैं। पात्र स्वर अभ्यास व वादक यंत्रो का मिलान भी शुरू कर देते हैं। रात लगभग दस बजे करियाला आरम्भ होता हैं। पात्र मंच पर खड़े होकर विभीन्न देवी–देवताओं की स्तुति गाते हैं। बंदिशे रागदुर्गा, भोपाली आदि रागो में होती हैं। इनकी रचना 14 मात्रा दीप चंदी में निबद्ध होती हैं। इसके उपरांत चंद्रावल शुरू होता हैं। मान्यता है, चंद्रावल के बगैर करियाला शुरू नही हो सकता। ये शिव और शक्ति को मंचस्थ करना हैं। ये देवी– देवता हम देखने वालों व करियाला करने वालों की रक्षा करते हैं। फिर साधू का स्वांग शुरू होता हैं। करियाला का मुख्य रस श्रृंगार और हास्य हैं। यह एक ऐपिसोडिक लोकनाट्य रूप है। एक से दो घंटे तक एक प्रसंग खेला जाता है। अभिनेता गाते नाचते अभिनय करते हैं, परिस्थितिजन्य लोकनाट्य में आशुअभिनय का बोलबाला है। आज तक करियाला के किसी भी प्रसंग की कोई पांडुलिपि लिखी नही गयी, कथा लोक जीवन में आने वाली स्थितियों का समसामायिक भाष्य है। करियालची समाज के हर वर्ग को आपने व्यंग बाणों से गुदगुदाता है, सामाजिक विद्रुप और चरित्रों के खोखलेपन को उजागर करना, अंध– विश्वास, कुरीतियो पर टिपण्णी करना करियालची अपना धर्म समझता हैं। अंग्रेज़ का स्वांग आज भी प्रासंगिक है क्योंकि आज़ादी के बाद सत्ता मे आये हमारे कर्णधारो पर अंग्रेजों की तरह ये तंज कसते हैं। लम्बरदार का स्वान भी इसी तरफ गाँव के नम्बरदार की गड़बड़ियों को उजागर करता हैं तो पंजाबी का स्वांग दो आदमियो के बीच एक स्त्री की कथा है। प्रदर्शन के दौरान करियालचियो को दर्शक इनाम में पैसे देते हैं। सूरज की पहली किरण तक करियाला चलता है। प्रदर्शन तय होने पर साही या पेशगी ली जाती है जिसमें दिन तारीख समय स्थान आदि निश्चित हो जाते हैं। करियालची उस दिन बसोंसे, पैदल, सर पर वस्त्र वाद्य यंत्रो रूप सज्जा आदि सामग्री के साथ ऊँची ऊँची पहाड़ौ चोटियो पर यानी चेधारमें, घाट में चढ़ते उतरते पहुँच जाते हैं। 12–15 लोगो का यह दल बहुत कम दक्षिणा में अपनी कला साधना करता हैं पर इससे इनका व इनके बच्चो का जीवन व्यापन नहीं हो पाता इसलिए इनको और धंधो मे लगे रहना पड़ता है। ग्राम कवारा के ठाकुर मनोहरसिंह (मनोहरभाई) अकेले करियालची रहें हैं जिनको संगीत नाटक अकादमी ने सम्मानित किया है वरना नवीन माध्यमो के आ जाने से इस शैली और इसके कलाकारो की दुर्दशा हो रही है, लोकनाट्य हाशिये पर पहुँच चूका है। अभिज्ञान नाट्य असोसियेशन संगीत नाटक अकादमी के संयोग से पहली बार उपलब्ध मंडिलियों को एक मंच पर लाकर संवाद – परिसंवाद – संरक्षण – अंकन व प्रदर्शनों के साथ इन्हे एक मंच पर लाने का प्रयास कर रहा है। कुठार रियासत ने करियाला की पहली मण्डली बनायीं थी और इसको करने वाले यही आसपास के गाँव में रहते हैं।यही पास करियाला के भगवान बिजेश्वर देव का स्थान भी हैं इसलिए हमने ये गाँव दाढ़बा को चुना है।

हिमालय की सभ्यता क्रम – विकास

प्राकृतिक शक्तियों – बिमारियों – घटनाओं – भयानक जीव जन्तुओं से भयातुर होकर यह मान लिया गया था कि ऐसी कोई शक्ति है जो मनुष्यों – और प्रकृति में होने वाले परिवर्तन को चलाती है वो ईश्वर है और उनकी पूजा–अनुष्ठान–उपासना–से से वो प्रसन्न होंगे – भूत पिशाच– डाकनी–शाकनी–घात, दोष, झाड़फूंक से देवता–ईश्वर–महाशक्तियाँ हमारे पाप और दोषों को दूर भगा देती हैं। इसीलिये भैंसा–शेर–साँप–व्याघ्र जैसे जन्तुओं की पूजा की जाती थी। पीपल–बरगद–नीम–आम–आंवला जैसे पेड़ों की पूजा की जाती थी। हिमाचल में ऊँचे पहाड़– घाटियाँ– झरने–वनों–नदियों–वनस्पति फल–कंद मूल–औषधियों से भरा हुआ है। इसीलिये ऋषियों मुनि–तपस्वियों ने यहाँ आश्रमों– गुफाओं–कंदराओं को अपना निवास स्थान बनाया। वेद–उपनिषद, संहिताऐं, पुराण, महाभारत, रामायण जैसे महा काव्यों ने अपना आकार लिया।

वेदों उपनिषदों और पुराणों में उस हिमालय क्षेत्र का विशाल अंकन हुआ। काव्य परम्पराओं में यहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्य का विषद वर्णन हुआ है। धार्मिक पूजा पद्धतियों–अनुष्ठानों ने अनेक परम्पराओं का निर्माण किया। इन मान्यताओं पर विश्वास कर कथा साहित्य–बृहद् कथा–कथा सरित सागर जैसे अनेक ग्रंथों का जन्म हुआ। मूर्तिकला चित्रकला ने इस हिमालयन क्षेत्र की अलग पहचान बनाई। कांगड़ा शैली आज संसार प्रसिद्ध चित्रकला के रूप में अपनी पहचान रखती है। वैदिक पौराणिक काल में सबसे पहला यह बड़ा यह क्षेत्र है – विभिन्न धर्मों ने यह अपना अस्तित्व पाया। शाक्त–शैव जैन–बौद्ध धर्मों का आज भी यह बड़ा केन्द्र है यहाँ के लोकगीत–आख्यान मूलक परम्परायें आज विश्व साहित्य की धरोहर हैं। नृत्य संगीत, वाद्यों की यहाँ एक अनुठी परम्परा है। जहाँ शिषिर तन्तु–धन–और चमड़े से बने वाद्य यंत्रों की अद्भुत परम्परायें हैं। नृत्य नाटी–ऋतु परिवर्तन–कटाई–पूर्णिमा अमावस्या को आज भी की जाती है।

ईसा पूर्व 4–5 शताब्दी से यहाँ देव की यात्रा पालकी सवारी की परम्परा है जहाँ रात रात भर रत जगे किये जाते थे। बौद्ध धर्म की जातक कथाओं को जन सामान्य में आर्दश और विश्वास पैदा करने के साधन थे इनमें देव–दानवों के बीच युद्ध की कथायें साधु और उनके आश्रम की कहानियाँ पशु पक्षियों के माध्यम से पंचतंत्र की कहानियों का गाथा गायन–अभिनय आदि किया जाता था। हिमाचल प्रदेश के शिला लेखों–सिक्कों से उस समय के धार्मिक मान्यताओं – वस्त्र विन्यास–पगडियों, मुद्राओं, गीत संचलन आदि अनेक अंकनों से हमें ढेरों जानकारियाँ मिलती।

खतरनाक मोड़ों पर देवता, नदियों, झरने के किनारे भगवान–घने और फलदार वनों में देवी देवताओं के मंदिर मिलते हैं। भग्नावशेषों से विभिन्न सभ्यताओं का ज्ञान होता है। बहुत सी जगह अध्ययन केन्द्र साधना, चिंतन, तपस्या के रूप में आज भी जानी जाती है। तो बहुत से स्थान स्वास्थ लाभ, योग चिकित्सा और झाड़ फूंक के लिए प्रसिद्ध हैं। तो कुछ शैव, खश भागवत सम्प्रदाय–शाक्त, नाथ, पाशुपात सिद्ध आदि के लिए प्रसिद्ध है।

संस्कृति और सभ्यता में मानवीय कला

हम जिस समय में आज हम हैं वहाँ संस्कृति, दर्शन, इतिहास एवम परम्पराओं में काफी भिन्न भेद, उलझी बातें ज्यादा हैं। दुर्भाग्यवश हमारे देश में इन विषयों का कोई विधिवत अंकन, अध्ययन, अनुसंधान भी नहीं हुआ जबकि पाश्चात्य देशों ने इन विषयों में गहन खोजबीन की है। यही नहीं विदेशी विद्धवानों ने ही भारतीय संस्कृति परम्परा, इतिहास, दर्शन का भी गहन अध्ययन किया और अपनी तरह से उसकी व्याख्या भी की और उन्ही की तर्ज पर हमारे विद्धानों ने अपनी सांस्कृतिक धरोहरों, साहित्य काव्य की मिमांसा, वेद, उपनिषद, ब्राहम्ण ग्रंथों को पढ़ा समझा। उसी चश्में से हमने संस्कृति, परम्परा आदि के विश्लेषण किये। पिछली शताब्दी में साम्यवादी क्रांति के बाद हमारी सामुहिकता के बोध को खत्म ही कर दिया। अब हम भारतीय परम्परा को उसी चश्में से देखने के आदि हो गये। उन्होंने हमारी लोकतंत्रीय परम्पराओं, उससे उपजी संस्कृति को, सामन्ती, दोयम दर्जे की संस्कृति घोषित कर दिया। उससे समझ बढ़ने की जगह हम धर्म–सम्प्रदाय की नज़र से इन गहन विषयों को देखने लगे। कलाओं को भी हमने इसी रूप में देखना शुरू कर दिया। बची–खुची समस्या को और विकराल बनाने में हमारे टी.वी. फिल्मों ने मदद की। आधे अधूरे ज्ञानी स्क्रिप्ट राईटर, धनी कम्पनियों ने महाकाव्यों को तमाशा बना दिया। विषयों में चमत्कारों, स्पेशल इफैक्ट आदि ने मूल काव्य का तमाशा बना दिया। उन्होने परम्पराओं का भरपूर दोहन किया पर उनके इन प्रयोगों ने पारम्परिक शैलियों का विकृत रूप ही पेश किया जबकि

आज हमारी विभिन्न प्रदेशों में बिखरी लोक शैलियाँ लुप्त होने के कागार पर पहुँच गयी हैं और हमारा समाज, सरकार इनको बचाने की नाम मात्र कोशिश कर रही है। जो कुछ लोग इनके अंकन अध्ययन अनुसंधान में लगे हैं उनका मकसद लीपापोती करके फंड को बचा लेने की तिकडमों में लगा है। सांस्कृतिक केन्द्र के बाबू इन फाईलों को पास करने के एवज में बिल्डिगें बना रहे हैं।

करियाला पर क्यों आवश्यक है यह अध्ययन प्रकृति से उपजी कला

हमारी संस्कृति और परम्पराऐं व्यक्ति केन्द्री नहीं हैं वो देश–काल–परिस्थिति में मानव जीवन के बीच बह रही बयार की तरह है। हम सामुहिकता में विश्वास करते हैं– प्रकृति, ऋतु परिवर्तन, खेती बाड़ी, खान–पान, आचार–व्यवहार, नृत्य, गीत, संगीत, उल्लास, मेले, त्यौहार उत्सव सब एक साथ मनाते हैं। हमारी धार्मिक मान्यता, पूजा अनुष्ठान विश्वास सामुहिकता का बोध करवाते हैं। पर हम सभी की अपनी मान्यता, परम्परा, पूजा पद्धतियों का भी सम्मान करते रहे हैं। हम अपनी संस्कृति का अध्ययन इस मूल भाव के बगैर नहीं कर सकते। कहीं बड़देव, मातृशक्ति, शिव गणेश, विष्णु आदि की सामूहिक पूजा–अराधना से शुरू होती है तो कहीं अल्लाह, बुद्ध, महावीर स्वामी, पीरों, फकीरों की वाणियों के बिना कोई काम शुरू नहीं होता। प्रार्थना में हम, हमारा समाज, देश और सारा संसार सुखी रहे और हम सबके कष्ट कम हों की प्रार्थना करते हैं। क्या ऐसा उदाहरण दूसरी मानव सभ्यता में दिखता है।

आज जितना देश दिख रहा है वहीं तक भारतीय परम्पराऐं हैं या नेपाल, बांग्लादेश, चीन, मलेशिया, जापान, इंडोनेशिया, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानीस्तान में भारतीय महाकाव्य, मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तु, नृत्य, संगीत, युद्धकला, रूप सज्जा, नाट्य रूपों का असर नहीं हुआ है। क्या इतने बड़े देश में प्रत्येक प्रदेश में कला रूपों के असंख्य रूप मौजूद नहीं जो उपेक्षा से अपने अंत

की तरफ नहीं बढ़ रहे। माच, भवई, तमाशा, ख्याल, नाचा, बिदेशिया, साँग, स्वाँग, भांड भडैत, करियाला, कुंमाउनी, रामलीला, उत्तरप्रदशे की नौटंकी, रासलीला, पाला जात्रा, हरिकथा, यक्षगान, कुडियाट्टम को बचाना हमारा काम नहीं। क्या जनजातिय परम्पराओं का विषद अंकन, अध्ययन हुआ है। अभिज्ञान नाट्य ऐसोसिएशन विगत कई वर्षो से इस तरह की अनेक पारम्परिक गीत, संगीत, नाट्य पर काम कर रहा है। करियाला नाट्य का अंकन अध्ययन भी इसी अनुसंधान का एक और प्रयास है जो हिमाचल प्रदेश के सोलन व शिमला जिलों के ग्रामीण क्षेत्र का एक प्रसिद्ध लोक नाट्य है।

करियाला देवता, विश्वास और अनुष्ठान

हजारों वर्षों से हिमालय के एक बड़े भूभाग को देव भूमि कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि आर्यों ने द्रविडों से युद्ध करके इन हिस्सों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने ही इसकी सुन्दरता पर मोहित होकर इसका नाम देव भूमि हिमाचल रखा। यहाँ दक्ष, गंधर्व, किन्नर, अप्सराओं ने अपना निवास बनाया। प्रथम काव्य के रूप में ऋग्वेद की रचनाओं का गान शुरू हुआ। स्वर–ताल नृत्यों की पद्धतियाँ अस्तित्व में आया। इन सब अनुष्ठानों को समर्पित करने के लिये पूजा पद्धतियों, देवता और उनको प्रसन्न करने के आव्हान गीत देव स्थापना के गीत प्रतिष्ठा करने के सामूहिक गान शुरू हुए। मान्यतानुसार देव भूमि हिमाचल में 33 करोड़ देवी देवताओं का निवास बना। ऋतु चक्र परिवर्तन से प्रकृति में आने वाले परिवर्तनों, खेती, किसानी, फल फूल, वनस्पितियों, जीवन उपयोगी फसलों को पहले देवता को भेंट किया जाता था और फिर उसका उपयोग होता था, प्रत्येक सामाजिक पर्वों की एक देवी देवता होता था जिसकी कृपा से समाज उसका जीवन उल्लास और खुशियों से भर जाता था। आज भी लोग उन देवी देवताओं से मांगते हैं उसे मानता कहा जाता है। उपवास, व्रत, ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ना या दुर्गम पहाडियों के गहरे में उतर कर जन सामान्य इन देवी देवता की पूजा अर्चना व यात्रा करते थे। जो कुछ खास महीनों के खास दिन अलग देव मंदिरों में मेले भरे जाते हैं जहाँ दूर दूर से श्रद्धालू

यात्री इकठ्ठे होते हैं और खानदान सहित धार्मिक अनुष्ठानों को उल्लासपूर्वक मनाते हैं। बहुत से स्थान ऐसे भी होते हैं जहाँ मान्यतानुसार रात्री बितानी होती है। यही धरती है वो कथाएँ जो दंत कथाओं में कहीं सुनी जाती थीं। ऐसी ही कथाओं का नाम है करियाला। इसमें नाट्य शास्त्र के अनुसार गीत–नृत्य संगीत के शिल्प में इन कथाओं का नाट्य घटता है। चाँदनी रात में कुछ मशालों के प्रकाश में बहुत सी कथाऐं मधुर गीत, नृत्य, संगीत में गाकर कही जाती रही। ऐसा माना जाता है इन कथाओं को सुनने–देखने से मनुष्य के पाप दूर हो जाते हैं और देवता सुख शाँति की वर्षा करता है।

करियाला के देव बिजेश्वर

हिमाचल प्रदेश की सुरम्य घाटियों में सोलन घाटी भी मानी जाती है। देवदार के घने जंगलों से जब हम नीचे तलहटी में उतरते हैं वहीं है एक पहाड़ी नदी, एकदम खामोश, हवा पानी और जंगल मिलकर एक शानदार स्वर पैदा करते हैं जो मन भावन है। प्रचूर स्वस्थ हवा दिल दिमाग को तरोताज़ा कर देती है। देव स्थान आने के पहले ही मन प्रफुल्लित हो जाता है। कई पहाड़ी मोड़ों से मंदिर का प्रांगण दिखने लगता है। एक छोटे से पुल को पार कर हम मंदिर प्रांगण में प्रवेश करते हैं। दूर से छोटा दिखने वाला मंदिर अंदर काफी लम्बा चौड़ा है। मुख्य मंदिर के अलावा प्रांगण कई हिस्सों में बंटा है। धर्मशाला, खाना बनाने और बैठ कर खाने का लंगर। बीच में करियाला के लिये प्रांगण जहाँ चारों तरफ दर्शनार्थी बैठ कर इस अद्भुत लोक–नाट्य शैली का आनंद लेते हैं। मंदिर भी दो हिस्सों में बंटा है। ऊपर और नीचे देवता कि मूर्तियाँ हैं, लोग नीचे ही दर्शन करते हैं पर पुजारी बताते हैं मुख्य मंदिर ऊपर है जिसका दर्शन कुछ खास लोग ही करते हैं। देव बिजेश्वर–करियाला परम्परा के देव हैं और इनका जिक्र किसी वेद–पुराण की किताब में नहीं है। ये स्वंयमभू देवता हैं जो लोक मान्यता से लोक देवता बने फिर भी कई कहानियाँ इन्हें महाभारत के भीम पुत्र बहुवाहन से जोड़ते हैं यही दंत कथाओं में प्रचलित है।

प्रत्येक वर्ष चैत्र माह में तीन दिनों का मेला लगता है और इस मेले में सोलन–शिमला, सिरमौर–म्हासु के ग्रामीण अंचलों के करियालयी देवता को हाजरी देने आते हैं और इन दिनों में रात–रात भर करियाला चलता है और इन कथाओं को देखने हज़ारों ग्रामीण जुटते हैं।

मशालों, चन्द्र किरणों और तारों की मद्धम रोशनी, नदी की कल कल ताजी हवा के ठंडे झोंके इस स्थान को सचमुच देव लोक में बदल देते हैं। ढोल, नरसिंघा, शहनाई, हारमोनियम और गायकों के मधुर स्वर का यह अलौकिक आनंद यहीं आकर ही किया जा सकता है। शब्द कम हैं इसकी अभिव्यक्ति के लिये।

क्या है यह करियाला

लोक जीवन में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने के लिये हमेशा से कुछ नीति कथाऐं गायन करने की परम्परा है। इन मूल्यों की स्थापना में जो मनोरंजक गायन,वादन, नृत्य किया जाता है उसे स्थानीय लोग वैदिक स्वर, वैदिक ताल और वैदिक क्रीड़ाएं कहते हैं और इन तीनों से करियाला का जन्म होता है।

यह नाट्य शैली पूरे हिमालय में फैली है, कश्मीर, उत्तरांचल, नेपाल, सिक्किम तक इससे मिलती जुलती नाट्य शैलियाँ मौजूद हैं। कहीं इसकी कहानियाँ जातकों से आयीं, कहीं रामायण, महाभारत से। कुछ कथाऐं सामाजिक विषमता से उपजी हैं।

स्थानीय विशेषताओं ने भी इनको कुछ अन्य नाट्य सामग्रियाँ दी जिनसे ये नाट्य शैलियाँ अपनी अलग पहचान बनाने में सहायक हुई। हिमाचल प्रदेश के ही बहुत से क्षेत्रों में इसके नाम अलग हैं पर प्रस्तुतिकरण के शिल्प में समानताऐं हैं। चम्बा, कांगड़ा में भगत–भगतन नाट्य शैली है। खापर चन्द्रोली, गाड़ी गौड़न, साधु हीरन, बड़ेचु, बुढ्ढा बाठडा, धाजा–रासा, हाले–धाडू, हारूल इनमें से ज्यादतर तेजी से लुप्त होती जा रही हैं। फिर कश्मीर के भांड–नक्काल जैसी अनेक शैलियों से मिलती है। इनमें शिक्षा–हास्य के साथ पहुँचाने का शिल्प विधान है। श्रृंगार इसका उपरस है पर इसका यह मतलब कतई नहीं कि वीर–रौद्र–भयानक, वीभत्स, करूण, अद्भुत इससे नहीं होता है। सभी रसों का आना जाना कथानुसार चलता रहता है पर हास्य और श्रंगार प्रमुख हैं। सदियों से बीच मंच पर सामने अग्नि जलती थी और मशालों की रोशनी में प्रदर्शन होते थे। गीत, नृत्य, संगीत कथा कहने के माध्यम थे। मध्यम गति में रात भर अनेक कथाऐं कही जाती हैं पर कहा जाता है कि पहले के अभिनेता अपने गायन, नृत्य और मधुर संगीत के साथ करियाला करते थे वो भी पूरी रात में एक कथा।

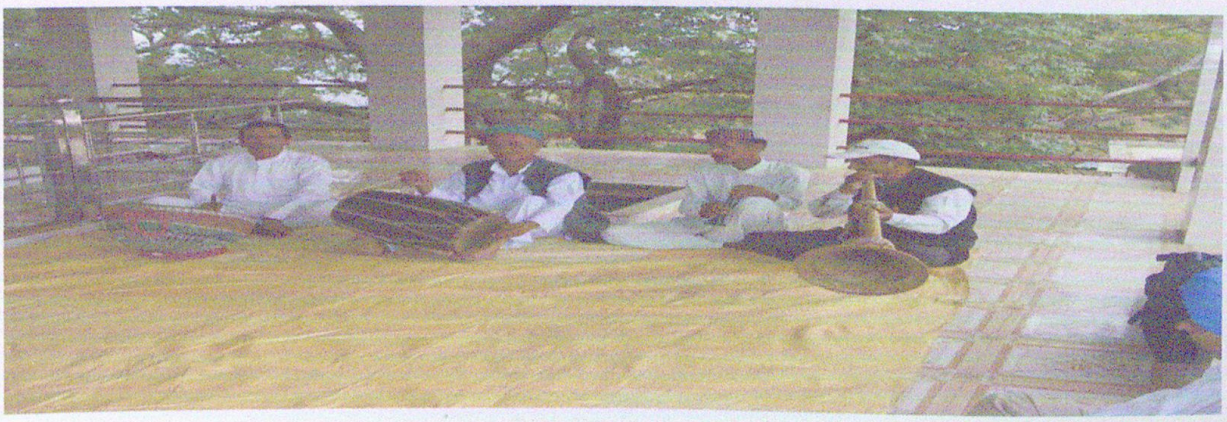

हिमाचल व करियाला का नाट्य शिल्प

इसकी शुरूआत हिमाचल के इतिहास से करनी पड़ेगी। मेले, त्यौहार, उल्लासपूर्ण गीत, नृत्यों के अवसर होते हैं। विशिष्ठ तरह की वेशभूषा, श्रृंगार, रंगों का प्रयोग, हस्तशिल्प इस प्रदेश को सारे संसार में अलग पहचान दिलवाते हैं। चित्रकला, कांगडा शैली, काष्ठकला, विशेष किस्म की वास्तु सहज ही इस प्रदेश की विशेषता है। ऊँचे पहाड़, नदी घाटियाँ, चीड़ और देवदार के जंगल, कंद मूल, फल, वनस्पिति और इन रमणीय स्थलों में देव देवी के स्थान आश्रम, मठ, विशिष्ठ वाद्य यंत्र, ढोल, डंका, शहनाई, बाँसुरी, रण सिंहा सारी दुनिया में इस स्थल को अपनी अलग पहचान देता है। ग्राम देवता, कुल देवी, उनकी पालकियाँ जब उंका, निशान चंवर परवों के परिभ्रमण पर निकलते हैं तो माहौल एक अद्‌भुत आश्चर्य से भर जाता है। आर्य सभ्यता, बौद्ध मंदिर इस स्थान की अपनी विशिष्ठता है। भाषा हिन्दी, कांगड़ी, पहाड़ी, मंडयाली, पंजाबी, डोगरी है तो नाटियाँ इस क्षेत्र की विशेषता है। छोटे–छोटे राजा रजवाड़ों ने इस राज्य को सारे संसार से अलग बनाया। उत्तर पश्चिमी ये राज्य 21629 मील, 50 हजार किलोमीटर के भूभाग में फैला है। यहाँ देव यक्ष, गंधर्व, अपसराओं का देश है। 85 प्रतिशत लोग सुसंस्कृत पढ़े लिखे हैं। हिमाचल प्रदेश शिवालिक पर्वत श्रंखला का हिस्सा है। उपरी सतह पर धौलाधार पर्वत श्रृंखला है। चम्बा, खजियार, डलहौजी, धर्मशाला, कुफरी, कुल्लू, मनाली, शिमला यहाँ के प्रमुख पर्यटक स्थल हैं।

नाट्य शास्त्र की लोकधर्मी नाट्य परम्परा और करियाला और वयोवृद्ध कलाकारों का कथन

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा दुनियाँ की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में शामिल है। काव्य–कला–शिल्प, नृत्य, संगीत और नाट्य अभिनय का तो यह केन्द्र रही है। नाटक को पंचम वेद माना है और उसी नाट्य शास्त्रीय परम्परा में नाट्यधर्मी, लोकधर्मी, नाट्य की विवेचना की गई है। हमारे देश में इतिहास लिखने की कोई परम्परा तो है नहीं, फिर नाटक का इतिहास तो और भी मुश्किल। अभी तक सैंकड़ों नाट्य रूपों का अंकन अनुसंधान, परिमार्जन भी नहीं हुआ। इसीलिये इस नाट्य कला और इसके व्यवहार के बारे में अभी तक दावे से कुछ नहीं कहा जा सकता है। मौखिक रूप से गीत, नृत्य, अभिनय की इन शैलियों में बहुत कुछ परम्परा का होता है और बहुत कुछ नया जुड़ता जाता

है। जिस परिवेश में ये नाट्य शैली पल्लवित होती है वहाँ की स्थानीयता भी उसका हिस्सा बन जाती है। इसमें सामाजिक, राजनैतिक बदलाव, आर्थिक व प्रकृतिक घटना गाने, वाद्य यंत्रों के बदलाव रहन सहन व आचार व्यवहार, वेश भूषा तकनीकें आदि का बहुत बड़ा हाथ होता है। लोक नाट्यों के मूल रूप और आज जब हम इसे देख रहे हैं काफी बदलाव आ चुके हैं। जब हम करियाला लोक नाट्य को देख रहे हैं तो इसी संदर्भ को ध्यान में रखकर देखें कुछ कथाऐं शुरू तो पारम्परिक तरह से होती हैं पर धीरे–धीरे इसके अभिनय शिल्प, संगीत, नृत्य, सरकारी योजनाऐं, फिल्मी प्रभाव, मेकअप के तरीके, वस्त्र विन्यास, ध्वनि उपकरण से मंच विधान सभी में बदलाव आ चुके हैं। पुराने लोग अलाव के प्रकाश या मशालों में इसका प्रदर्शन करते थे पर आज हेलोजन, पार लाइट आदि का प्रयोग होता है। करियालची भी अपने ध्वनि उपकरण साथ लेकर आते हैं और मुखोटों, श्रृंगार सामग्री के शानदार बक्से होते हैं। वस्त्रों में बदलाव तो आये ही हैं पर नहीं बदली तो वो मूल कथाऐं जो कई शताब्दी से चल रही हैं। चन्द्रावल, शिव–पार्वती की स्थापना का स्वांग है और साधु का स्वांग प्राचीन कथा गौरख मच्छिन्द्र की नव नाथ जैसे योगियों का आख्यान हैं पर इन कथाओं में जोक्स, शेरोशायरी, दोहे, चौपाई, कविताऐं कभी भी प्रवेश कर जाते हैं। बदलते समय की कहावतें भी इनका हिस्सा बन जाता है। फिल्म, टी.वी. के चरित्र उनकी एक्शन संवाद अदायगी भी अनायास आ जाते हैं, कभी भी आशु अभिनय पाने, तत्कालिक प्रभाव आकर चले जाते हैं। जबकि प्राचीन वैदिक ताल–राग अब

बीते कल की बातें हो गई हैं। अब इनकी गिनती के कलाकारों की स्मृतियों में ये है।

वयोवृद्ध कलाकार ख्याली रामजी जिनकी उम्र इस समय 95 से ऊपर है आज़ादी के पहले राजा के दरबार के 16 करियालों का जिक्र करते हैं जबकि लच्छी राय जी की उम्र करीब 84 साल है और आज भी वो करियाला करते हैं। ढोल, शहनाई भी बजाते हैं और गाते भी हैं। ख्याली राम जी तो उस समय के प्रसिद्ध कलाकारों को याद करते हैं– तेतु भाई, कलिया भाई, दयाराम हमारे समय के बहुत बड़े करियाली थे, क्या गाते थे क्या अभिनय करते थे पूरा इलाका उनकी कला का दीवाना था। वो चरित्र में डूब जाते थे। ख्याली राम जी की आँखों में अद्भुत प्रकाश आया और चला गया। यही है लोकधर्मीता के बदलाव और 150 साल का इतिहास। उन्होंने कहा आज के करियाली में वो बात कहां– स्वर नही, ताल नहीं, भाव नहीं– मैं तो अब करियाला देखने जाता ही नहीं फिर एक उदास खामोशी चारों तरफ फैल गई। पूर्णिमा का चाँद आसमान में धीरे धीरे चीड़ देवदार और पहाडियों से दिखने लगा था। फाल्गुन की इस आखिरी रात में सारा गाँव फसल कटने पर घर घर से थोड़ा–थोड़ा अन्न मिलाकर देव स्थान में खाना बनाते और देव को भोग लगाकर पत्तलों पर परोसे खाने का आनंद ले रहे थे।

BEAUTY

करियाला की जन्म स्थली, राज्य प्रश्रय, व कुठाड़ स्टेट

करियाला की प्रमुख जगहों में सोलन जिले का एक छोटा सा राज्य है। राणा का किला लगभग 800 साल पुराना है जो आज मूर्ति संग्रहालय के रूप में जाना जाता है। यह रायल फैमिली व दरबार का मिला जुला महल है। शिमला से लगभग 55 किलोमीटर और दिल्ली से 365 किलोमीटर की दूरी पर है कुठाड़ राज्य का यह महल। राजस्थानी वास्तु का नमूना है, इसमें राजपुताना शैली के म्यूरल चटख रंगों से बने हैं। अंदर राणाओं के तेल चित्रों की श्रंखला है। यहाँ ऊपर एक पुराने मंदिर के अवशेष भी हैं। सुरम्य फूलों की घाटी में स्वच्छ पानी के स्रोत बह रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्टेट कुठाड़ उसके राजा बहुत क्रूर और अय्याश थे। एक दिन उनके सपने में देव बिजेश्वर आये और धिक्कारा अरे पापी तुझ से यहाँ की जनता बहुत त्रस्त है और स्टेट के लोग नास्तिक हो रहे हैं। तुझे उसकी रक्षा करनी है इसलिए तुझे 16 दिन तक देव बिजेश्वर के नाम पर अपने राज्य में करियाले करवाने हैं। इस घटना को घटे लगभग 400 वर्ष बीत गये। स्टेट के राजा ने यह सपना अपने दरबाररयों को सुनाया और तय हुआ कि अब से इसके बाद 16 करियाले करवाने शुरू किये जाऐं पर 16 दिनों तक के लिये प्रदर्शन करने के लिए मंडलियाँ नहीं मिलती थी। बहुत विचार कर उसने निर्णय लिया कि करियाले के कलाकारों को राज्य में नौकरी पर रख लिया जाए। आस पास के क्षेत्र से अच्छे कलाकार चुनकर उन्हें राजदरबार में रख लिया पर तनख्वाह कम थी पर राज्य के पास उबड़ खाबड पहाड़ियाँ बहुत थीं। राजा ने वो सब जमीनें करियालचीयों को दे दीं। उन करियालिचीयों ने जमीन को समतल बनाया और अपने गाँव बसाये। इसमें भी प्रमुख गाँव हैं, दाड़वा जहाँ हम लोगों ने यह मंडलियों का समागम किया। दूसरी कथा में राजा के देव विजेश्वर की स्तुति के समय अपने से बडे राजा को अपने क्षेत्र के लगान के रूप में सिर्फ 16 दिन तक करियाले करवाने होते थे। इसी सुबाधु की गहरी घाटी में देव विजेश्वर का मंदिर है जहाँ चैत्र में मेला भरता है आज भी करियालयी इस मेले में आकर पूरे भक्ति भाव से सलामी के रूप में अपनी मंडली के साथ करियाला करते हैं। देव विजेश्वर महाभारत के यौद्धा बबरीक का पुत्र है और बबरीक भीम का पुत्र

था मान्यता है। हे विजेश्वर विजय का प्रतीक है। इसी घाटी में करियाले का जन्म हुआ और प्रदर्शनकारी कला के रूप में जाना जाने लगा। मान्यता पूरी होने पर आज भी हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पर्वत श्रंख्ला के पठार के जिले म्हासू, सिरमौर, सौलन, शिमला में गाँव गाँव में करियाला करवाने की परम्परा है जो तेजी से खत्म होती जा रही है। करियाला एक अनुष्ठानिक नाट्य है।

करियाले का शिल्प विधान

करियाला अनुष्ठानिक लोक नाट्य है। देवता की कृपा बनी रहे और परिवारजन सुखी रहें इसके लिये खान–दान पूरे गाँव का धार्मिक, सामाजिक समागम होता है। रात भर का जागरण कर इसे सामुहिक रूप से देखा सुना और आनंद लिया जाता है। आरंभिक कथाऐं सामाजिक नैतिक मुल्य व उपदेशात्मक शिक्षा के

रूप में कही जाती हैं। इसका कथन का प्रमुख तत्व है इसका अभिनेता वो गाता है, नाचता है और अभिनय करता है। करियालचची संगीत, नृत्य, नाट्य सब थोडा थोडा जानते हैं और अपने को देव विजेश्वर के करियाले में समर्पित कर देते हैं। उनका मानना है हम ये काम देवता के आदेश से कर रहे हैं। भक्ति इसका मूल है, शरीर में चरित्र आ जाते हैं। नृत्य, गीत, संगीत और नाट्य उस भाव को पहचाने के माध्यम हैं। शरीर और देह भाषा से भावाभियक्ति में विभिन्न तरह की ताल मदद करती है। संगीत कथा कहने, चरित्र भावों को जन सामान्य से जोड देते हैं। जबकि भाव अभिनय इसमें रंजक रंग भर देता है। इसके लिये करियालची और संगीत मंडली के बीच जबरदस्त ताल–मेल रहता है। चरित्र को विकसित करने में वस्त्र विन्यास मंच सामग्री, मुखौटे, रूप सज्जा से मदद लेनी होती है। हाजिर जबाबी, शेरोशायरी, दोहे चौपाई, मुहावरे और चुटकले से करियालची दर्शक की रोचकता बढ़ाता है इसके लिए उस्ताद, गुरूओं से दान लेकर होता है। नृत्य नाटी के गुरू अलग तो गाना सीखाने वाले उस्ताद अलग पर चरित्रों और अभिनय देखते देखते सिखाया जाता है और पूरे खेल में एक बार कलाकार अपने गुरू को भी याद करता है, मास्टर खुशी राम एक अच्छे नृत्य प्रशिक्षक थे तो मनसुख मास्टर हारमोनियम के उस्ताद रहे हैं, मास्टर धनिराम ढोल के गुरू थे किरपा राम जी तालों के बारे में बताते हैं। सबसे पहले मशाल पूजाई, ताल बजाई जाती है। इसका मतलब यहाँ किसी व्यक्ति या किसी गाँव के प्रांगण में करियाले का नाट्य होगा। जंग ताल 16 माजा में है जबकि

करियाला 14 मात्रा याने दीप चंदी में बजता है। ताल नेत्रा काली 8 मात्रा में साधु के स्वांग के बाद बजाई जाती है। जियालाल ठाकुर सोलन– इस नाट्य शैली की पुरानी बंदिशों के विभिन्न रागों को बताते चलते हैं। वो इन स्वरों को वैदिक ध्रुवागान से जोड़ते हैं। ढंके की शैली में ताल बजाने को वैदिक ताल या छंद विधान बताते हैं। दीप चंदी के सिर्फ 2 भाग ही होते हैं फिर इसका शास्त्रीयकरण हुआ। जियालाल जी शास्त्रीय रागों के स्वर और करियाले में इसका प्रयोग बहुत संतुलित तरह से करते हैं। भुवन शर्मा स्त्री पात्र के लिए बहुत जाने जाते हैं, वो नृत्य की बारिकियाँ मध्य से द्रुत और अतिद्रुत सेबिलभित में बहुत आसानी से आ जाते हैं। खड़े होने के तरीका हस्त मुद्रा, भ्रूसंचलन, हस्तक और लास्य के हर गुणों को इतनी सहजता से करते हैं कि नृत्य से उत्पन्न भाव हमें मजबूर करता है कि ये स्त्री ही है जबकि वो इस कार्य को देवता का आदेश समझकर करते हैं। दीपराय शर्मा बाजेश्वर करियाला पार्टी के मुख्य गुरू हैं। हास्य रस के किरदार करने में पूरे हिमाचल में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने यह सब अपने गुरू ठाकुर दत्त शर्मा और दौलतराम तंवर से सीखा। शानदार गायन, अभिनय आज भी ये अपने एक और गुरू के साथ करियाला करते हैं। गुरू ग्राम बायचिड़ी के 84 वर्षीय लच्छीराम जी हैं। ये साधु के स्बांग में मुख्य किरदार करते हैं। इस उम्र में भी भाषा, उच्चारण, शरीर भाव भंगिमा आदि में ताज़गी है। गुरू जी शहनाई ढोल के भी अच्छे वादक हैं।

करियाले का दल छोटा होता है। पर ये सब घूम घूम कर सभी काम कर लेते हैं। अभिनय वाला ढोलक बजा सकता है। साउंड सिस्टम चलाता है, किसी भी अगर अपनी जीप है तो वो ड्राइवर बन जाता है। 80 के दशक में जिस टोटल थियेटर की बात होती थी वही ट्रेनिंग इनकी हमेशा से रही है। यह शिल्प करियाला सहित देश के अधिकतर लोक नाट्य शैली में भी होता है। पारम्परिक लोक प्रदर्शनकारी सर्वगुण सम्पन्न होता है।

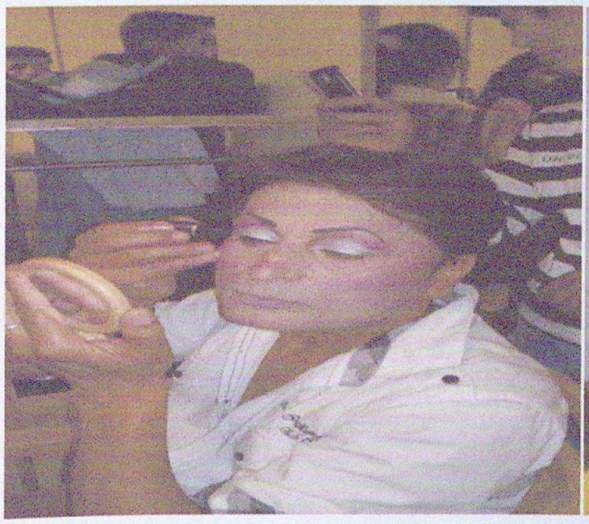

करियाला का क्षेत्र व धार्मिक सामाजिक मान्यताऐं

वैसे तो हिमाचल प्रदेश के 12 जिले हैं और प्रत्येक जिला अपने लोक साहित्य, शिल्प, संगीत, नृत्य व नाट्य परम्पराओं की वजह से अपनी अलग पहचान रखता है। चम्बा और कांगड़ा की तरफ भगत परम्परा है, वहीं धर्मशाला में जातक कथा आधारित बुद्ध का नृत्य नाट्य है। इसी इलाके के अन्य लोक नाट्य खापट, चन्द्रौली, गौड़–गौड़न, साधु हीरन आदि शैलियाँ भी होती हैं जबकि कुल्लू, मंडी, सुन्दर नगर, करसोग में लोक नाट्य बांठडा होता है जो करियाला से मिलता जुलता है पर कुछ क्षेत्रीय विशेषता इसे अलग पहचान भी देती है। धाजा, रासा, हाले, धोडू आदि अन्य लोक नाट्य ही के रूप हैं। सभी लोक नाट्य में गीत, नृत्य, संगीत और नाटय है। थोडे बहुत परिवर्तन से इनके नाम और क्षेत्र विशेष की वजह से नाम अलग हैं। जम्मू, कश्मीर के भांडो की ड्रेस अलग पर कहानियों में समानता है। उत्तराखंड में

भी कहानी और इसके प्रस्तुतिकरण में बहुत समानता है। आगे नेपाल और सिक्किम की लोक नाट्य का हास्य रस वैसा ही है जैसा करियाला में है।

करियाला सोलन, म्हासु, सिरमोर व शिमला के ग्रामीण अंचल का धार्मिक, सामाजिक मानता पूरी हो जाने पर किया जाने वाला लोक नाट्य है। देव विजेश्वर विजय के देवता है और जीवन में मुश्किल से मुश्किल काम पूरा कर देते हैं यही मानता है इन ग्रामीण अंचल में और काम भली भांति सम्पन्न हो जाने के बाद सकुटुम्ब, सपरिवार, संगोत्रीय और पूरे गाँव के साथ बैठकर रत जगा के रूप में देखा, सुना जाता है। शुरूआत में की जाने वाली आरती को सभी लोग लेते हैं और पैसे रूपये चढ़ाते हैं। देव वंदना में ताल और गान के साथ ताली बजाकर पूजा का हिस्सा बन जाते हैं। अत्यधिक ठंड भी इनकी आस्था के सामने बौनी हो जाती है जब तक सूरज की पहली किरण नहीं दिखती। तभी तक ग्रामीण दर्शक प्रसाद लेकर अपने घरों की तरफ लौट जाते हैं और यही करीयाला अनुष्ठानिक लोक नाटय सम्पन्न होता है। अर्थाभाव में आज कल यह प्रचलन तेजी से सिकुड़ता जा रहा है। पर जिस दिन कोई इसका प्रदर्शन करवाता है, 30–40 हजार रूपये इस अनुष्ठान में लगाता है। उस दिन सभी लोग आज भी इसका रसास्वादन करने झुंड के झुंड में चले आते हैं। घर का मालिक सभी को भोजन करवाता है जो दाल सब्जी और चॉवल के रूप में होता है। बाद में मीठा हलवा या कुछ मीठा भी दिया जाता है। पूरे प्रदर्शन के दौरान निरंतर चाय व बीच बीच में

विस्कुट, नमकीन की थाली घूमती रहती है। बूढे, बच्चे, औरतें, जवान बच्चे, सभी इसके प्रदर्शन को चारों तरफ बैठकर देखते हैं।

करियाला की कथाऐं, गीत, संगीत, वस्त्र विन्यास, सामग्रीयों का प्रयोग

पूरे हिमाचली भूभाग में धौलाधार के पठार में था शिवालिक पर्वत श्रंखला में लोक नाट्य और उनकी कथाओं में काफी समानताऐं हैं। कश्मीर के भांड अगर अंग्रेज बहादुर का स्वांग करते हैं तो यह हिमाचल प्रदेश के करियाला बांठडा उत्तराखंड, नेपाल, सिक्किम के लोक नाट्य रूपों में भी उपलब्ध है। भांडो का साधू का स्वांग हिमाचल, उत्तराखंड, नेपाल, सिक्किम तक के नाट्य रूपों में विद्यमान है ही प्रस्तुतिकरण की शैलियों में स्थानीय असर ज़रूर है। ये भाषा उच्चारण, गीत, संगीत, वाद्य, वस्त्र, सामग्री सभी में स्पष्ट अलग अलग दिखता है। करियाला में 16 स्वांग प्रसिद्ध हैं पर इनमें से लिखित रूप में एक भी नहीं है बस कथा का क्रम तय है।

किसी जमाने में ये एक एक स्वांग 16 रातों में प्रदर्शित होते थे और कथाओं में विस्तार था पर अब 1½–2 घंटे में एक कथा खत्म करके दूसरी शुरू हो जाती है और पूरी रात में चार पाँच कथा ही हो पाती है।

1) **चन्द्रावल–** शिव और पार्वती की मृत्युलोक आकर लोगों को मानवीय, धार्मिक आर्दशों पर चलने की उपदेशात्मक कथा हो जो पूर्णिमा के चन्द्र की रोशनी में शुरू होती थी। चन्द्रावल के बिना करियाला शुरू नहीं किया जा सकता। अब तो यह स्वांग पूजा की शुरूआत तक सीमित हो गया है।

2) **साधु का स्वांग–** चन्द्रावल के बाद किये जाने वाला दूसरा स्वांग है। गुरू गोरखनाथ के नाथ सम्प्रदाय ईसा से एक शताब्दी पूर्व की नव नाथों के देशाटन की कहानी है। नाथ योग की साख्य परम्परा के कर्णधार हैं। योगी मच्छीन्द्रनाथ, गौरखनाथ, गोपीचंद, भतृहरी सांख्य के ज्ञाता विद्ववान थे और परिब्राजक की तरह भ्रमण करते रहते थे। जहाँ पहुंचे वहीं धुनी रमाते अलख निरंजन का नाद करते थे। ये सब शैवथे और आटे की भिक्षा लेते हैं। भोजन खुद बनाते थे। गाते और चिमटा बजाते आगे निकल जाते थे। इन्हीं का स्वांग करियाला में किया जाता है।

3) **खान साहब–** मुगलों की सेना में पहाड़ के लोग काफी भरती किये जाते थे। जवान फौज में चले जाते थे और बरसों वापस अपने गाँव, अपने परिवार और पत्नि से नहीं मिल पाते थे। आने जाने के साधन नहीं थे, लम्बी छुट्टियाँ नहीं मिलती थीं सिर्फ यादें वो फौजी की भी और पत्नि की भी। आधा जीवन इंतजार में गुजर जाता था। पतियों को पत्नियों पर शक हो जाता था कि कहीं उसने किसी और से तो रिश्ता नहीं बना लिया। पर

हमारे देश में स्त्रीयाँ पति का इंतजार करते मर जाती थी पर धोखा नहीं करती थीं। इसी उदात्त विचार का यह स्वांग खान साहेब का स्वांग है जहाँ पति वर्षो की नौकरी के बाद गाँव आता है और पत्नि की परीक्षा लेने के लिये पठान का भेष धारण कर अपनी पत्नि को छेड़छाड करता है। जब वो कटार निकाल कर मारने को तैयार हो रही है तब पति अपना रहस्य खोल देता था और फिर दो प्रेमी मिल जाते हैं।

4) **लम्बरदार का स्वांग**– इस स्वांग में लम्बरदार यानि नम्बरदार बिना पढ़ा लिखा है और उसकी गलतियों से ग्रामीणों में दहशत रहती है। इस स्वांग में एक मुखौटे का प्रयोग भी लम्बरदार के लिये किया जाता है। पीछे एक लम्बी पहाडी टोकरी भी पीठ पर बंधी रहती है। पूरे मुंह पर सफेद पावडर, लम्बी पर लट की हुई मूंछ आँख पर पुरानी शैली का चश्मा, नाम के साथ नकली बड़ी बड़ी जिसमें दाढ़ी भी जुडी है। सफेद ही पंजाबी साफा, हल्का एक तिलक, सूत्रधार सवाल–जवाब करता है जिसका लम्बरदार उटपटांग

जबाब देता है इससे हास्य उत्पन्न होता है जो स्थानीय भाषा की वजह से जन सामान्य को गुदगुदाता है।

5) **पंजाबी का स्वांग–** आज हम जिस हिमाचल प्रदेश को देख रहे हैं वो पहले पंजाब का हिस्सा और इसी पंजाब से पाँच बड़ी बड़ी नदियाँ निकलती थीं। झेलम, रावी, सतलुज, व्यास, चिनाव और इन्हीं पाँच नदियों के नाम पर पंजाव नाम बना था। पहाडी क्षेत्रों में खेती लायक ज़मीनें कम होती थीं। दो भाई अगर अलग अलग शादी करगें तो जमीन बंटेगी। इसी को ध्यान में रखकर दो भाई एक ही स्त्री से शादी करते थे। पांडवों की भी यही कहानी है। दो भाईयों के बीच एक सुन्दर स्त्री है और उसको लेकर भाईयों में झगड़ा होता है जिससे छोटे भाई की हत्या हो जाती है और फिर पुलिस का आना और बाद में ज़मीन को

बचाने के लिए वो जमीन भी बिक जाना और हर तरफ से सब खत्म हो जाना की कहानी है।

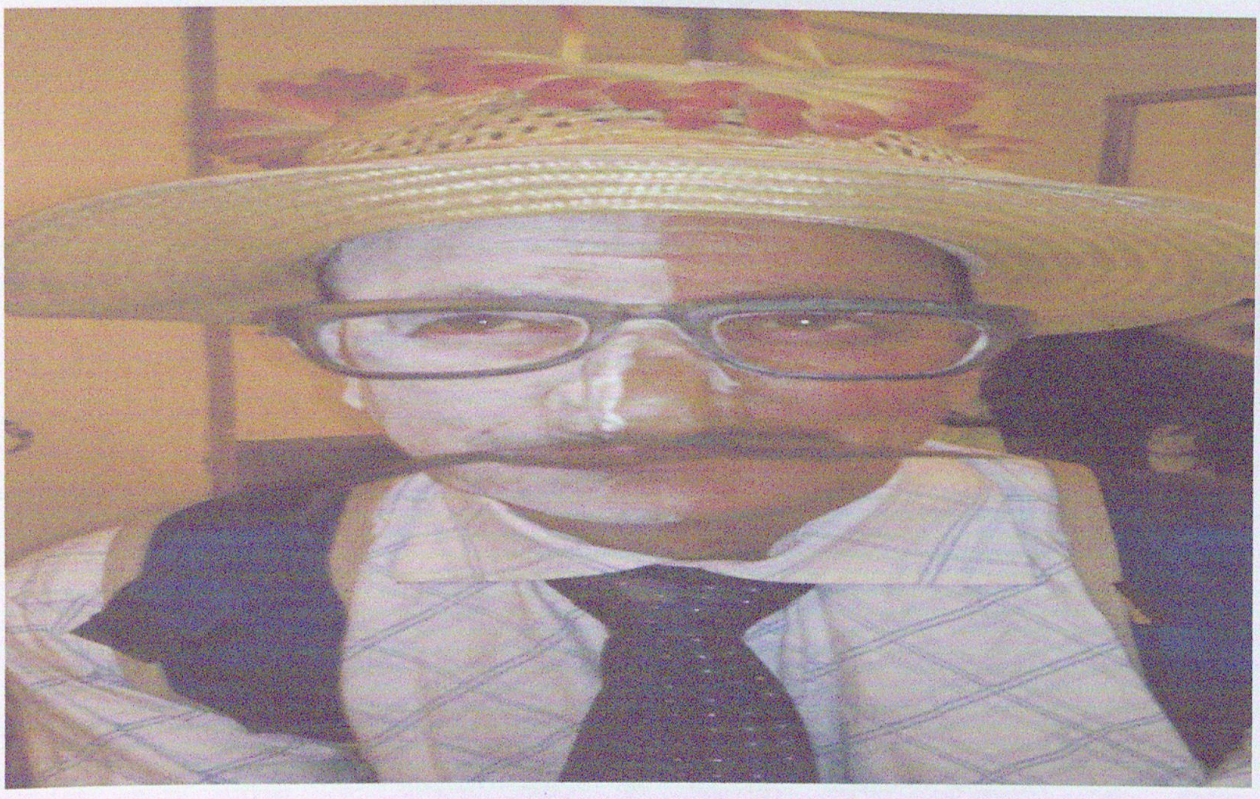

6) शिकार का स्वांग या अंग्रेज बहादुर का स्वांग फिर यह कथा कश्मीर, उत्तराखंड के लोक मंच पर भी खेली जाती है। अंग्रेज बहादुर पहाड़ पर आये और उनकी इस यात्रा में यहाँ के स्थानीय शिकारी उनका बहुत सा सामान नीचे से ऊपर तक लाये हैं। अंग्रेजी बहादुर अपने बंगलों में हैं जबकि शिकारी अलाव जलाकर रात भर ठंड से ठिठुर रहे हैं। दूसरे दिन साहब बहादुर शिकार पर निकलते हैं, उनके हाथ में बंदूक है पर अंग्रेज बहादुर से शिकारी चिढे हुए हैं। घने जंगल में जाकर ये सब अंग्रेज अफसर को डराते हैं जिससे साहब की रूह काँप जाती है और वो भाग खड़ा होता है।

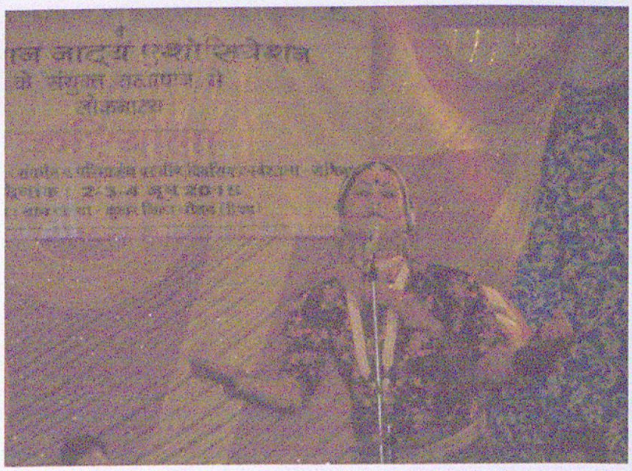

7) **नेपाली, नेपालन का स्वांग** – काम की तलाश में उत्तरांचल होकर हिमाचल प्रदेश तक और मेहनत करके जीवन में क्या क्या हुआ की कथा है आकर उत्तरांचल आये मेहनत की पर पहाड गिरने पर वहाँ काम कर रहे नेपाली पति की मृत्यु हो गई। फिर जवान नेपालन को दुनियाँ ने क्या और किस नज़र से देखा के विद्रुप पर व्यंग है फिर वहाँ से किसी और नेपाली के साथ हिमाचल आ गई। यहाँ पति शराबी हो गया और जीवन के लिए नेपालन को बहुत मेहनत से अपने बच्चे पालना पड़ रहा है।

इन कहानियों से मिलती जुलती अन्य कहानियाँ भी हैं पर अब ये स्वांग कोई मंडली नहीं करतीः

8) जाट का स्वांग

9) बरड़ा–बरडी का स्वांग

10) डायन का स्वांग

11) पठान का स्वांग

12) डाग और डायन स्वांग

13) राजा का स्वांग

14) ताऊ–ताईन का स्वांग

15) गंगी सुन्दर का स्वांग

16) धाडू और धाड़न का स्वांग

12) **पुराने और नये करियाली** – करियाले के पुर्ववर्ति कलाकार उस्तादों का कोई इतिहास तो नहीं है। कहीं पर कुछ कुछ उस्तादों के नाम यदा कदा सुनने को मिलते हैं। 94 वर्ष के ख्याली राम जी अपने बचपन के करियालयी को याद करते हैं उनमें कालिया भाई, हेटु भाई, दयाराम का नाम लेते हैं। ये सब करियाले के बड़े अभिनेता, गायक कलाकार थे। कुठाड राजा के दरबारी थे और राजा ने इनके जीवन व्यापन के लिये इन्हें ग्राम दाडबा में जमीन दी थी और बदले में ये इस क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों और दरबार में करियाला करते थे। मास्टर खुशीराम स्त्री पात्र और गायन नृत्य के मास्टर रहे हैं। घनश्याम दत्त, गंगाराम, दुर्गाराम, जानकीराम, खुशीराम, ठाकुर नेकराम, ठाकुर आत्माराम, संतराम, दीपराम, चैतराम तोमर, मास्टर मनसुख, धनीराम, ठाकुर गुरूदत्त, दौलतराम तंवर, परसराम तोमर, ठाकुर मनोहरलाल (मनोहर सिंह, रा.ना.वि, रंगमंडल प्रमुख), गोरखिया राम, सोहनलाल, बीरूराम, प्रभुदयाल, दयाल चंद, कृष्णदत्त, टेमराम धीमान, नेकराम, सरनिया राम, राय प्रकाश, विश राम, रामलाल, रीखी राय आदि कलाकार, अभिनेता वादकों का जिक्र आता है। वर्तमान में कुछ वयोवृद्ध

युवा अभिनेता वादक, गायक हैं इनमें ग्राम बरमू के दीपराम शर्मा, ग्राम बडोग के विश्नदत्त शर्मा, गांव डुम्मी के नरेश कुमार, सोलन के जियालाल ठाकुर, बाई चिढी गांव के लच्छीराम जी, ग्राम जीक्षा के भुवन शर्मा, गांव बाई चिढी के पूरण धीमान, ग्राम परानी के गुलाब सिंह, गांव शरावग के हेमदत्त, गांव पधोग के मुनीष कुमार, गांव छकड़ा बडा के पप्पूराम, गांव न्यारी के हीरासिंह चौहान, गांव थलटू के बलदेव, गांव कुम्हाली के मनोज कुमार, गांव घाट के ज्ञानचंद, गांव सतडोल के थानेश्वर चंद, गांव बरटू के किशनचंद्र शर्मा, गांव खनोग के ठाकुर देवेन्द्र, गांव चग्मी के गुरूदत्त शर्मा, गांव कोटी के ओमप्रकाश कोटी, गांव माही घाट के ठाकुर देवीदयाल, गांव कोटी के प्रदीप कुमार, गांव दाड़वा के कृपाराम तोमर, परसराम तोमर, और नितिन तोमर प्रमुख हैं।

वर्तमान के इन्ही कलाकारों के समर्पण से ये करियाला नाट्य शैली जिंदा है।

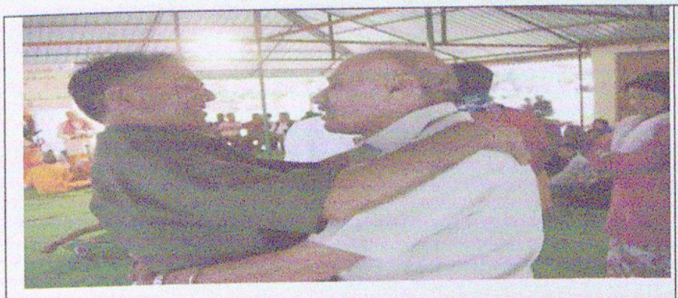

लोक नाट्य करियाला को कैसे बचाया जाये, करियालयी रंगकर्मी, विद्धानों के विचार

लोक नाट्य करियाला की बची खुची मंडली को इस कार्यक्रम में बातचीत का मौका मिला। आपस में विचार विमर्श से सभी कलाकारों के चेहरे पर थोडी सी रौनक आयी। ये संगीत नाटक अकादमी व अभिज्ञान नाट्य एसोसिएशन के अथक प्रयासों और दीर्घकालिन उन बातों से सहमत हैं। इस नाट्य को डूबने से बचाना है।

वर्तमान समय में इसके एक रात का खर्चा 30–35 हज़ार से भी ज्यादा है। लाईट, साउंड, विछात गद्दे रजाई, टेंट, प्रदर्शन, पारिश्रमिक, भोजन रातभर चाय नाश्ता कराना किसी मध्यम वर्गीय परिवार के लिये मुश्किल ही नहीं असंभव है। गरीब तो अब सोचते भी नहीं। सरकार अपनी योजनाओं का प्रचार–प्रसार गांव गांव तक पहुंचाने के लिये इसका इस्तेमाल करती है पर पैसे इतने काम मिलते हैं कि ऊँट के मुंह में जीरा। फिर इसके प्रदर्शन थोडी थोडी देर के लिये करना वो भी दिन के समय करना होता है। फिल्म टेलीविजन ने भी इस पारम्परिक लोक शैलियों को बहुत नुकसान पहुँचाया, कुछ मंडलियाँ फिल्म की कहानी भी करने लगी शुरूआत में इसके फायदे भी हुए पर टी. वी. ने उसको भी छीन लिया। फिर मंडली के गुरू या कर्ताधर्ता को कोई कार्यक्रम की साई मिल गई तो कलाकारों को इकठ्ठा करना मुश्किल हो गया। कलाकारों के स्वर उतर गए हैं ताल छूट गई है। भाव तो बहुत बड़ा सवाल बन गए हैं फिर भी कुछ मंडली इन हालातों में तालमेल बनाने में लगी है। पारम्परिक

कहानी नीरस हो गई, नई तकनीकी संसाधन में से ज्यादा पाये जा सकते हैं जो अब कोई देता नहीं पर जब वयोवृद्ध कलाकार पुराने समय की बात करते हैं तो उनकी आँखों, शब्दों सेहय भी उस काल के करियाला के आसपास पहुँच जाते हैं। फिर ज्यादातर कलाकार पढे लिखे नहीं हैं तो सरकारी मदद के लिये अनुदान नहीं ले पाते। ये तो यहाँ सब मिल गये तो इतनी बात भी हो गई वरना सब कुछ नियति पर छोड़ दिया है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की लगातार दो वर्षो तक मैंने खुद उन कार्यशालाओं के शिल्प में नई कहानी तकनीकी का प्रयोग किया पर बम्बई जाने वाले व टेलीविजन में काम करने वाली पीढी ने काफी नाक भौंह सिकोडी। श्री दीवान सिंह बजेली ने इसकी हास्यरस की ताकत को रेखांकित किया कि भारतीय लोक नाट्य हास्य व्यंग्य की कमी है जो इस नाट्य रूप में प्रचूर मात्रा में है इस पर काम होना चाहिये। श्री संगम पांडे ने कहा आधुनिक प्रशिक्षण और तकनीकों की समझ में इसके पतन को रोका जा सकता है। श्री एच.के.वालिया ने कहा ये सुखदः संयोग है कि हमस ब यहाँ आज इस लोक नाट्य पर बात करने के लिए इकठ्ठे हुए। हम साल भर में कई बार मिले, सरकार से इसके प्रशिक्षण और नई तकनीक के लिये कुछ प्रयोगिक प्रशिक्षण शिविर लगातार करने की कोशिश करने का आग्रह करे। परसराम तोमर (करियाली) ने इस पर सभी कलाकारों को ललकार लगाते कहा आप सब अपने फोन नम्बर एक दूसरे को दो मैं इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ, हम सरकार को मजबूर कर सकते हैं।

दीपराय शर्मा, विशनदत्त, नीतिन आदि ने इस संकल्प की तरह निभाने की बात कही।

- हम कहानियों में बदलाव लाये
- हम अपने पारम्परिक शिल्प को मांजे
- सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं से तालमेल बनाकर इसको करने के विद्वान पर कार्य करें।
- सरकारी अनुदान की संभावना तलाशें
- अपने बच्चों को छुट्टियों के दिनों में विधिवत प्रशिक्षित करें–जिससे राज्य अकादमी, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, संस्कृति मंत्रालय आदि से मदद लें

❖ और सबसे पहले हम इस देव कार्य में अपना विश्वास रखें

❖ देव विजेश्वर के मेले में सब आयें।